



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

7.3.24

4

6-8

दैनिक भास्कर

चौधरी चरण सिंह कृषि विवि को मुलेठी के सिल्वर नैनो कणों को बनाने की विधि पर मिला पेटेंट निमेटोड को नियंत्रण करने में कारगर साबित होंगे सिल्वर नैनो कण

भास्कर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वेरायटी एचएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनो कण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एम. बी.बी.एंड बी) की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. पुष्पा खरब के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधार्थियों डॉ. कनिका रानी व डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है। विवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि पॉलीहाउस, ग्रीनहाउस, बागवानी व सब्जियों में रूट नॉट निमेटोड (जड़-गांठ

मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनो कणों के फायदे

पौधों के इस्तेमाल से नैनो कणों को बनाने की विधि में केमिकल्स का कम उपयोग होता है और कोई अतिरिक्त जहरीला अवशेष भी नहीं बनता है। मुलेठी के इस्तेमाल से बनाए गए हमारे सिल्वर नैनो कण निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए हैं। किसान मुलेठी आधारित इन सिल्वर नैनो कणों का उपयोग निमेटोड संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए कर सकता है, जिसकी वजह से लगभग सभी खेती वाली फसलों की उपज और गुणवत्ता को गंभीर नुकसान पहुंचता है।



सूत्रकृमि) के संक्रमण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। पॉलीहाउस में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में वृद्धि हो

जाती है और इनकी अत्यधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उग पाती है। जिसकी वजह से किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरिभूमि	7.3.24	9	5-8

निमेटोड को नियंत्रित करने में कारगर साबित होंगे सिल्वर नैनोकण : प्रो. काम्बोज

मुलेठी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर एचएयू को मिला पेटेंट

हरिभूमि न्यूज » हिंसार



हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम के साथ।

फोटो: हरिभूमि

मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों के फायदे

पीछे के इस्तेमाल से नैनो कणों को बनाने की विधि में केमिकल्स का कम उपयोग होता है और कोई अतिरिक्त जहरीला अवशेष भी नहीं बनता है। मुलेठी के इस्तेमाल से बनाए गए हमारे सिल्वर नैनोकण निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए हैं। किसान मुलेठी आधारित इन सिल्वर नैनो कणों का उपयोग निमेटोड संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए कर सकता है, जिसकी वजह से लगभग सभी खेती वाली फसलों की उपज और गुणवत्ता को गंभीर नुकसान पहुंचता है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल दीगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु महता, मीडिया एडवाइजर डॉ. सर्वोप आर्य व एसवीसी कपिल आरोड़ा उपस्थित रहे।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वेरायटी एचएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एमबीबी एंड बी) की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. पुष्पा खरब के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधार्थियों डॉ. कनिका रानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 वर्ष की अवधि के लिए 486872 संख्या से पेटेंट अनुदत्त किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बुधवार को कहा कि पॉली हाउस, ग्रीन हाउस, बागवानी व सब्जियों में रूट नॉट निमेटोड (जड़-गांठ सूत्रकृमि) के संक्रमण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। पॉली हाउस में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में वृद्धि हो जाती है और इनकी अत्यधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उग पाती है। इसकी वजह से

किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट निमेटोड पर टेस्ट किया।

इस कार्य के लिए सूत्रकृमि विभाग के वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश बानाकर का सहयोग लिया गया। शोधार्थियों ने यह जांच-पहले लैब में, फिर स्क्रीन हाउस में की, दोनों ही केस में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकण रूट नॉट निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए, इससे संबंधित और शोध कार्य जारी है।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि कमर्शियल

केमिकल / नेमैटोसाइड (वाणिज्यिक रासायनिक सूत्रकृमिनाशक) की तुलना में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों की बहुत कम मात्रा ही सूत्रकृमिनाशक के रूप में प्रयाप्त पाई गई। इसलिए इन सिल्वर नैनोकणों को विभिन्न कृषि फसलों के लिए उपयोग किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा इजाद की गई सिल्वर नैनोकण बनाने की यह विधि प्रभावी, किफायती और स्थिर है।

विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि यह पेटेंट मुलेठी

(वेरायटी एचएम-1) के मूल अर्क का उपयोग करके उसे सिल्वर नैनोकणों में परिवर्तित करने की बेहतर विधि है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं। इन नैनोकणों में नेमैटोसाइडल (सूत्रकृमिनाशक) क्षमता की जांच इन विट्रो व इन विवो स्थितियों में भी की गई थी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

अज्ञात समाचार

दिनांक

7.3.24

पृष्ठ संख्या

5

कॉलम

5-8

निमेटोड को नियंत्रण करने में कारगर साबित होंगे सिल्वर नैनोकण : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, 6 मार्च (विरेंद्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वेरायटी एचएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एम.बी.बी.एंड बी) की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. पुष्पा खरब के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधार्थियों डॉ. कनिका रानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 वर्ष की अवधि के लिए 486872 संख्या से पेटेंट अनुदत्त किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए कहा कि पॉलीहाउस, ग्रीनहाउस, बागवानी व सब्जियों में रूट नॉट निमेटोड (जड़-गांठ सूत्रकृमि) के संक्रमण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। पॉलीहाउस में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में वृद्धि हो जाती है और इनकी अत्याधिक संक्रमण दर के कारण कोई



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम के साथ।

फसल नहीं उग पाती है। जिसकी वजह से किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट निमेटोड पर टेस्ट किया। इस कार्य के लिए सूत्रकृमि विभाग के वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश बानाकर का सहयोग लिया गया। शोधार्थियों ने यह जांच पहले लैब में, फिर स्क्रीन हाउस में की, दोनों ही केस में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकण रूट नॉट निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए, इससे संबंधित और शोध कार्य जारी है। प्रो. काम्बोज ने बताया कि कमर्शियल कैमिकल नेमैटिसाइड (बाणिज्यिक रासायनिक सूत्रकृमिनाशक) की तुलना

में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों की बहुत कम मात्रा ही सूत्रकृमिनाशक के रूप में प्रयास पाई गई। इसलिए इन सिल्वर नैनोकणों को विभिन्न कृषि फसलों के लिए उपयोग किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा इजाद की गई सिल्वर नैनोकण बनाने की यह विधि प्रभावी, किफायती और स्थिर है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं। विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि यह पेटेंट मुलेठी (वेरायटी एच.एम-1) के मूल अर्क का उपयोग करके उसे सिल्वर नैनोकणों में

परिवर्तित करने की बेहतर विधि है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं। इन नैनोकणों में नेमैटिसाइड (सूत्रकृमिनाशक) क्षमता की जांच इन विट्रो व इन विवो स्थितियों में भी की गई थी।

मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों के फायदे : पौधों के इस्तेमाल से नैनो कणों को बनाने की विधि में कैमिकल्स का कम उपयोग होता है और कोई अतिरिक्त जहरीला अवशेष भी नहीं बनता है। मुलेठी के इस्तेमाल से बनाए गए हमारे सिल्वर नैनोकण निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए हैं। किसान मुलेठी आधारित इन सिल्वर नैनो कणों का उपयोग निमेटोड संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए कर सकता है, जिसकी वजह से लगभग सभी खेती वाली फसलों की उपज और गुणवत्ता को गंभीर नुकसान पहुंचता है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढोंगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु महता, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य व एस्वीसी कपिल अरोड़ा उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	7.3.24	2	6-8

एचएयू को मुलेठी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर मिला पेटेंट

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वेरायटी एचएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एमबीबीएंडबी) की पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. पुष्पा खरब के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधार्थी डॉ. कनिका रानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि पॉली हाउस, ग्रीनहाउस, बागवानी व सब्जियों में रूट नॉट निमेटोड (जड़-गांठ सूत्र कृमि) के संक्रमण से बहुत अधिक



पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम के साथ एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। स्रोत: आयोजक

नुकसान देखा गया है। पॉली हाउस में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में वृद्धि हो जाती है और इनकी अत्यधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उग पाती है, जिसकी वजह से किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट निमेटोड पर टेस्ट किया। इस कार्य के

लिए सूत्र कृमि विभाग के वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश का सहयोग लिया गया। शोधार्थियों ने यह जांच पहले लैब में, फिर स्क्रीन हाउस में की। दोनों ही केस में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकण रूट नॉट निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए, इससे संबंधित और शोध कार्य जारी है। मुलेठी के इस्तेमाल से बनाए सिल्वर नैनोकण निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	7.3.24	3	1-8

हकृवि को मुलेठी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर मिला पेटेंट

हिसार 6 मार्च (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वैरायटी एच.एम.-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एम.बी.बी.एंड बी.) की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. पुष्पा खरब के नेतृत्व में उनके पीएच.डी. शोधार्थियों डॉ. कनिका रानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेंट अधिनियम

1970 के अंतर्गत 20 वर्ष की अवधि के लिए 486872 संख्या से पेटेंट अनुदित किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए कहा कि पॉलीहाउस, ग्रीनहाउस, ब्रागवानी व सब्जियों में रूट नॉट निमेटोड (जड़-गांठ सूत्रकृमि) के संक्रमण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। पॉलीहाउस में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में वृद्धि हो जाती है और इनकी अत्यधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उग पाती है। जिसकी वजह से किसानों को भारी आर्थिक



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम के साथ।

नुक्सान उठाना पड़ता है। इसलिए हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट निमेटोड पर टेस्ट किया। इस कार्य के लिए

सूत्रकृमि विभाग के वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश बानाकर का सहयोग लिया गया। शोधार्थियों ने यह जांच पहले लैब में, फिर स्क्रीन हाउस में की, दोनों ही

केस में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकण रूट नॉट निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए, इससे संबंधित और शोध कार्य जारी है।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि कमर्शियल कैमिकल नैमैटिसाइड (वाणिज्यिक रासायनिक सूत्रकृमिनाशक) की तुलना में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों को बहुत कम मात्रा ही सूत्रकृमिनाशक के रूप में पर्याप्त पाई गई। इसलिए इन सिल्वर नैनोकणों को विभिन्न कृषि फसलों के लिए उपयोग किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा इजाजत की गई सिल्वर नैनोकण बनाने की

यह विधि प्रभावी, किफायती और स्थिर है।

विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नोरज कुमार ने कहा कि यह पेटेंट मुलेठी (वैरायटी एच.एम.-1) के मूल अंक का उपयोग करके उसे सिल्वर नैनोकणों में परिवर्तित करने की बेहतर विधि है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं। इन नैनोकणों में नैमैटिसाइडल (सूत्रकृमिनाशक) क्षमता को जांच इन विट्रो व इन विवो स्थितियों में भी की गई थी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	07.03.2024	--	--

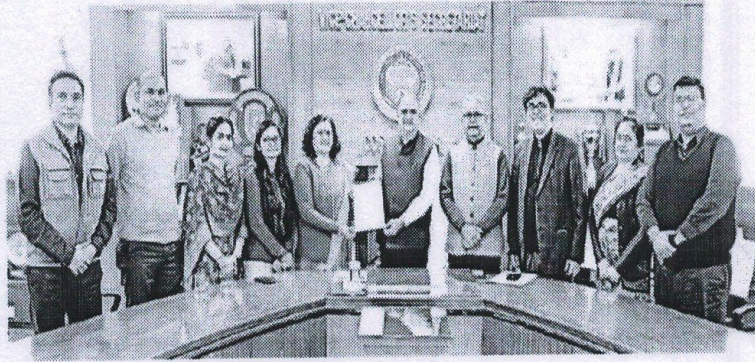
दैनिक सवेरा

हकृवि को मुलेठी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर मिला पेटेंट

कुलपति बोले, निमेटोड को नियन्त्रण करने में कारगर साबित होंगे सिल्वर नैनोकण

सवेरा न्यूज़/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 6 मार्च : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वेरायटी एचएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एम.बी.बी.एंड.वी.) की पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. पुष्पा खरब के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधार्थियों डॉ. कनिका रानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 वर्ष की अवधि के लिए 486872 संख्या से पेटेंट अनुदान किया गया है।



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम के साथ।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए कहा कि पॉलीहाउस, ग्रीनहाउस, बागवानी व सब्जियों में रूट नॉट निमेटोड (जड़गाठ सूत्रकृमि) के संक्रमण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। पॉलीहाउस में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की

आबादी में वृद्धि हो जाती है और इनकी अत्यधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उग पाती है। जिसकी वजह से किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट निमेटोड पर टेस्ट किया। प्रो. काम्बोज ने बताया कि कमर्शियल

केमिकल नेमैटिसाइड (वाणिज्यिक रासायनिक सूत्रकृमिनाशक) की तुलना में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों को बहुत कम मात्रा ही सूत्रकृमिनाशक के रूप में प्रयास पाई गई। इसलिए इन सिल्वर नैनोकणों को विभिन्न कृषि फसलों के लिए उपयोग किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा इजाद की गई

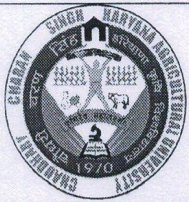
यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं

विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि यह पेटेंट मुलेठी (वेरायटी एचएम-1) के मूल अंक का उपयोग करके उसे सिल्वर नैनोकणों में परिवर्तित करने की बेहतर विधि है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं। इन नैनोकणों में नेमैटिसाइड (सूत्रकृमिनाशक) क्षमता की जांच इन विद्युत व इन विवो स्थितियों में भी की गई थी।

मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों के फायदे

पौधों के इस्तेमाल में नैनो कणों को बनाने की विधि में केमिकल का कम उपयोग होता है और कोई अतिरिक्त जहरीला अवशेष भी नहीं बनता है। मुलेठी के इस्तेमाल से बनाए गए हमारे सिल्वर नैनोकण निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए हैं। किसान मुलेठी आधारित इन सिल्वर नैनो कणों का उपयोग निमेटोड संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए कर सकता है, जिसकी वजह से लगभग सभी खेती वाली फसलों की उपज और गुणवत्ता को गंभीर नुकसान पहुंचता है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल खेंगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु महता, पीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य व एसवीसी कपिल अरोड़ा उपस्थित रहे।

सिल्वर नैनोकण बनाने की यह विधि प्रभावी, किफायती और स्थिर है।



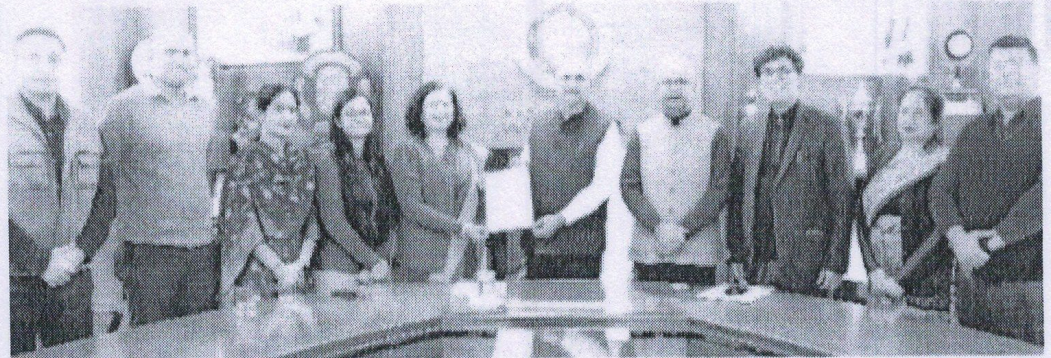
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	06.03.2024	--	--

हकृवि को मुलेठी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर मिला पेटेंट

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वेरायटी एचएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एम.बी.बी.एंड बी) की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. पुष्पा खरब के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधार्थियों डॉ. कनिका रानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 वर्ष की अवधि के लिए 486872 संख्या से पेटेंट अनुदत्त किया गया है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए कहा कि पॉलीहाउस, ग्रीनहाउस, बागवानी व



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम के साथ

सब्जियों में रूट नॉट निमेटोड (जड़-गांठ सूत्रकृमि) के संक्रमण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। पॉलीहाउस में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में वृद्धि हो जाती है और इनकी अत्यधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उग पाती है जिसकी वजह से किसानों को आर्थिक नुकसान

उठाना पड़ता है। इसलिए हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट निमेटोड पर टेस्ट किया।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि यह पेटेंट मुलेठी (वेरायटी एचएम-1) के मूल अर्क का उपयोग करके उसे सिल्वर नैनोकणों में परिवर्तित करने

की बेहतर विधि है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं। इन नैनोकणों में नेमैटोसाइडल (सूत्रकृमिनाशक) क्षमता की जांच इन विट्रो व इन विवो स्थितियों में भी की गई थी। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल खोंगड़ा, डॉ. मंजु महता, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य व कपिल अरोड़ा उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि किरण न्यूज	06.03.2024	--	--



Hari Kiran News

15n

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर मिटा पेटेंट निमेटोड को नियंत्रित करने में कारगर साबित होंगे सिल्वर नैनोकण : प्रो. कम्बोज

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वेराघटी एचएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एमबीबी एंड बी) की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. पुष्पा खरब के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधार्थियों डॉ. कनिका रानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 वर्ष की अवधि के लिए 486872 संख्या से पेटेंट अनुवत किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने कहा कि पॉली हाऊस, ग्रीन हाउस, बागवानी व सज्जियों में रूट नॉट निमेटोड (जड़-गांठ सूत्रकृमि) के संक्रमण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। पॉली हाउस में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में वृद्धि हो जाती है और इनकी अत्याधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उग पाती है। जिसकी वजह से किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट निमेटोड पर टेस्ट किया। इस कार्य के लिए सूत्रकृमि विभाग के वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश बानाकर का सहयोग लिया गया। शोधार्थियों ने यह जांच पहले लैब में फिर स्क्रीन हाऊस में की, दोनों ही केस में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकण रूट नॉट निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए, इससे संबंधित और शोध कार्य जारी है।

प्रो. कम्बोज ने बताया कि कमर्शियल केमिकल नेमैटोसाइड (वाणिज्यिक रासायनिक सूत्रकृमिनाशक) की तुलना में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों की बहुत कम मात्रा ही सूत्रकृमिनाशक के रूप में प्रयाप्त पाई गई। इसलिए इन सिल्वर नैनोकणों को विभिन्न कृषि फसलों के लिए उपयोग किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा इजाजत की गई सिल्वर नैनोकण बनाने की यह विधि प्रभावी, किफायती और स्थिर है।

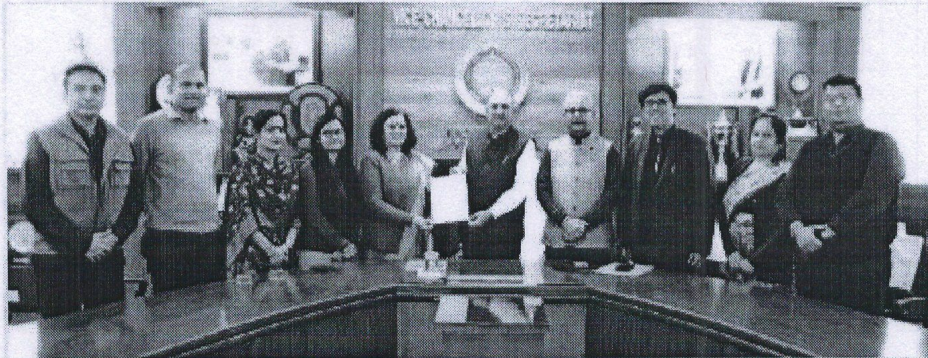
यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं

विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि यह पेटेंट मुलेठी (वेराघटी एचएम-1) के मूल अर्क का उपयोग करके उसे सिल्वर नैनोकणों में परिवर्तित करने की बेहतर विधि है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं। इन नैनोकणों में नेमैटोसाइडल (सूत्रकृमिनाशक) क्षमता की जांच इन विट्रो व इन विवो स्थितियों में भी की गई थी।

मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों के फायदे

पौधों के इस्तेमाल से नैनो कणों को बनाने की विधि में केमिकल का कम उपयोग होता है और कोई अतिरिक्त जहरीला अवशेष भी नहीं बनता है। मुलेठी के इस्तेमाल से बनाए गए हमारे सिल्वर नैनोकण निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए हैं। किसान मुलेठी आधारित इन सिल्वर नैनो कणों का उपयोग निमेटोड संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए कर सकता है, जिसकी वजह से लगभग सभी खेती वाली फसलों की उपज और गुणवत्ता को गंभीर नुकसान पहुंचता है।

इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल डींगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु महता, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य व एसवीसी कपिल अरोड़ा उपस्थित रहे।





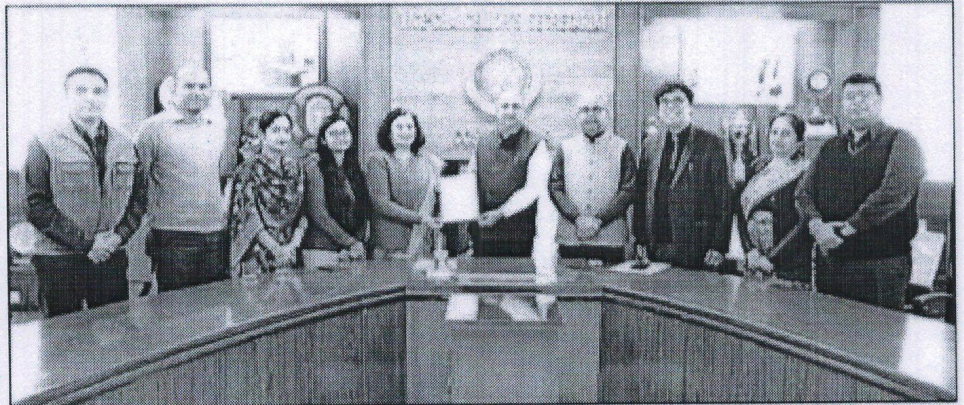
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	06.03.2024	--	--

हकृषि को मुलेठी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर मिला पेटेंट

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (बेरायटै एनएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एम.बी.बी.एंड बी) की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. पूषा खख के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधार्थियों डॉ. कनिक्ता रानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 वर्ष की अवधि के लिए 486872 संख्या से पेटेंट अनुदान किया गया है।



विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए कहा कि पौनीहाऊस, ग्रीनहाऊस, बागवानी व सब्जियों में रूट नॉट निमेटोड (जड़-गाँठ सूत्रकृमि) के संक्रमण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। पौनीहाऊस में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में वृद्धि हो जाती है और इनकी अत्यधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उग पाती है। जिसकी वजह से किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट निमेटोड पर टेस्ट किया। इस कार्य के लिए सूत्रकृमि विभाग के वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश बानाकर का सहयोग लिया गया। शोधार्थियों ने यह जांच पहले लैब में, फिर स्ट्रॉन हाऊस में की, दोनों ही केस में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकण रूट नॉट निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए, इससे संबंधित और शोध कार्य जारी है।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि कर्मरिशन केमिकल नेमैटिमाइड (वाणिज्यिक रासायनिक सूत्रकृमिनाशक) की तुलना में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों की बहुत कम मात्रा ही सूत्रकृमिनाशक के रूप में प्रयास पाई गई। इसलिए इन सिल्वर नैनोकणों को विभिन्न कृषि फसलों के लिए उपयोग किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा इजाजत की गई सिल्वर नैनोकण बनाने की यह विधि प्रभावी, किफायती और स्थिर है।

यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं।

विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. वीरज कुमार ने कहा कि यह पेटेंट मुलेठी (बेरायटै एनएम-1) के मूल अर्क का उपयोग करके उसे सिल्वर नैनोकणों में परिवर्तित करने की बेहतर विधि है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं। इन नैनोकणों में

नेमैटिमाइड (सूत्रकृमिनाशक) क्षमता की जांच इन विट्रो व इन विवो स्थितियों में भी की गई थी।

मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों के फायदे: पौधों के इस्तेमाल से नैनोकणों को बनाने की विधि में केमिकल्स का कम उपयोग होता है और कोई अतिरिक्त जहरीला अवशेष भी नहीं बनता है। मुलेठी के इस्तेमाल से बनाए गए हमारे सिल्वर नैनोकण निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए हैं। किसान मुलेठी आधारित इन सिल्वर नैनोकणों का उपयोग निमेटोड संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए कर सकता है, जिसकी वजह से लगभग सभी खेती वाली फसलों की उपज और गुणवत्ता को गंभीर नुकसान पहुंचता है।

इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल डोंगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु महता, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य व एसवीसी कपिल अरोड़ा उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	06.03.2024	--	--

हकृवि में खरीफ फसलों पर कृषि अधिकारी कार्यशाला 7 व 8 मार्च को

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 6 मार्च : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में 7 व 8 मार्च को कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 आयोजित की जाएगी। कार्यशाला का शुभारंभ बतौर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज करेंगे, जबकि अतिरिक्त मुख्य सचिव, कृषि और किसान कल्याण, पशुपालन व डेयरी विभाग, हरियाणा सरकार श्री अंकुर गुप्ता कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद होंगे। साथ ही कार्यशाला में निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग एवं प्रबंध निदेशक, हरियाणा बीज विकास निगम श्री राजनारायण कौशिक, आईएएस तथा अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण, हरियाणा डॉ. आर.एस. सोलंकी भी उपस्थित रहेंगे। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित कराई जाने वाली दो दिवसीय कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी व विस्तार कार्यकर्ता भाग लेंगे।

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि कार्यशाला में आगामी



खरीफ मौसम की फसलों में लागू की जाने वाली नई तकनीकों पर आधारित सिफारिशों को अंतिम रूप दिया जाएगा। इसके अलावा वैज्ञानिक तथा कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी फसलों में आई समस्याओं के समाधान पर भी विचार-विमर्श करेंगे।

इस अवसर पर कृषि अधिकारियों को विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का दौरा करवाकर उन्हें फसलों, फलों तथा सब्जियों पर किए जा रहे परीक्षणों एवं अनुसंधानों की जानकारी दी जाएगी। साथ ही कार्यशाला के दौरान विभिन्न तकनीकी सत्र आयोजित किए जाएंगे, जिनमें विभिन्न फसलों की समग्र सिफारिशों पर चर्चा की जाएगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	7-3-24	4	6-8

दैनिक भास्कर

बसंतकालीन मक्का की बिजाई के लिए एचएम-10 व 11, आईएमएच-225 व 226 किस्मों का करें इस्तेमाल किसान दोहरी पंक्ति में बिजाई करके बचा सकते हैं 25 प्रतिशत तक पानी

भास्कर न्यूज़ | हिसार

बसंतकालीन मक्का की बिजाई के लिए रेतीली व अर्ध दोमट मिट्टी तथा अच्छे जल निकासी वाले खेतों का चयन करें। अच्छी पैदावार के लिए लंबी व मध्यम अवधि वाली संकर किस्मों का प्रयोग करना चाहिए। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि साधारण मक्का की किस्म एच.एम. 10 व एच.एम. 11, उच्च क्वालिटी प्रोटीन मक्का की किस्म एच.क्यू. पी.एम. 1 व एच.क्यू.पी.एम. 4 का इस्तेमाल करें। हाल ही में विकसित की गई किस्मों में से आईएमएच. 225 एवं आईएमएच 226 का इस्तेमाल कर सकते हैं।

क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र करनाल के निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग के अनुसार बिजाई से पहले खेत को तैयार कर लें, खेत को चार से पांच चुताई करके दो बार सुहागा लगाएं, ताकि मिट्टी भुरभुरी हो जाएं और खेत में ढेले बिलकुल न रहें। बिजाई जल्द से जल्द पूरी कर लें। बिजाई में देरी करने से गोभ में प्ररोह मक्खी का आक्रमण बढ़ता है। साधारण मक्का व उच्च क्वालिटी प्रोटीन मक्का के लिए 8 किलोग्राम, स्वीट कॉर्न के लिए 3-4 किलोग्राम व बेबी कॉर्न के लिए 12 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ की दर से



दोहरी पंक्ति में की गई मक्का की खेती।

■ **बिजाई की विधि:** बिजाई के लिए न्यूमैटिक प्लांटर व बेड प्लांटर का उपयोग करें। मक्का की बिजाई के लिए दोहरी पंक्ति रोपण विधि कारगर रहती है। इस विधि से बिजाई करने पर 20-25 प्रतिशत पानी की बचत होती है।

■ **खाद व उर्वरक:** अधिक पैदावार के लिए पहले गोबर की खाद 60 क्विंटल प्रति एकड़ की दर से डालें। सिफारिश की गई पूरी फोस्फोरस (24 किलोग्राम), पोटाश (24 किलोग्राम), जिंक सल्फेट (10 किलोग्राम) व एक तिहाई नाइट्रोजन (20 किलोग्राम) बिजाई के समय डालें।

प्रयोग करें। मक्का में बिमारियों से बचाव के लिए बीज को 4 ग्राम थीरम या 2.5 ग्राम कैप्टान तथा प्ररोह मक्खी के नियंत्रण

के लिए 7 मि.ली. इमिडाक्लोप्रिड (17.8 एस.सी.) प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें।